International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/advanced
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 89-90

बी. एड. प्रशिक्षण में सामजिक विज्ञान अध्यापन के लिए अनुदेशन सामग्री का विकास

डॉ0 सतनाम सिंह

Ph.D. (Education), Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttrar Pardesh, India

प्रस्तावना

शिक्षा मनुश्य के विकास का साधन है। षिक्षा द्वारा ही वह अनेक षक्तियो का उपार्जन कर अपने वातावरण पर विजय प्राप्त करता है शिक्षा वातावरण को नियत्रिंत करने की वह शक्ति है। जिसमे व्यक्ति अपने निहित सम्भवनो की पूर्ती कर सकता है। वह अपने व्यक्तित्व में निहित योग्यताओ को विकसित कर उच्च स्तर का सामायोजन स्थापित करता है शिक्षक को अपने विद्यार्थियो में उनकी सूझबूझ व्यक्तिव एंव ज्ञानात्मक पक्ष को पूर्णतः विकसित करने के लिये उन नवीनतम पद्धतियो का उपयोग करना आवश्यक है। वर्तमान युग में नवीन आयामो को दृश्टिगत रखते हुये बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियो में अनुदेशन तकनिकी का प्रयोग नितांत आवश्यक है। ताकि वह अपने सृजनात्मक कौशल के माध्यम से ज्ञानात्मक एंव व्यवहारिक उद्देश्यो को अधिक शक्तिशाली विधि से प्राप्त कर सके जीव विज्ञान विशय में पाठय वस्तु को छोटी–छोटी ईकाईयो में विभाजित कर स्पश्ट रूप से प्रस्तत किया जा सकता है सामान्यत बी.एड. के प्रशिक्षणार्थी शिक्षा के दर्शन पाठयक्रम का विकास शिक्षा के सिद्धांत एवं सामान्य अध्यापन विधियो से परिचित होते है। परन्तु किसी विशिश्ट विशय की पाठय वस्तु के अध्यापन को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने की कला और कौशल से पूर्णतः परिचित नही होते है।

शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिये शिक्षण तकनिक मानवीय तथा अमानवीय दोनो साधनो का उपयोग कारती है मूल समस्या यह है कि जो शिक्षक परम्परागत विधि से बिना अनुदेशन सामग्री का उपयोग किये अध्यापन कार्य करते है वह बालक में इस सीमा तक अध्यापन को प्रभावशाली बनाने में तथा बालको में पाठय वस्तु को समझने का कौशल उत्पन्न करने में सफल होते है। अथवा नही इसकी तुलना में अध्यापन कार्य में संबंधित विशय की अनुदेशन सामग्री का उपयोग किया जाता है। तो वह किस सीमा तक अपने अध्यापन के उद्देश्य में सफल होते है। इस शोध पत्र में इसी तुलनात्मक व्यवहार का सूक्ष्म व्यवहारिक अध्यन किया गया है।

प्रशिक्षण के संबंध में मेकालेज मिनिट सें हरटोग कमेटी हण्टर कमीशन मुदालियर कमीशन कोठरी कमीशन और नई शिक्षा नीति में प्रशिक्षण की विभिन्न कमियों का विश्लेशण कर अपने सुझाव दिये है मूलतः बी. एड. के प्रशिक्षणार्थियो को प्रशिक्षण से संबंधित शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा दर्शन शिक्षा सिद्धांत शिक्षा प्रशासन के साथ अपने अध्यापन के विषिश्ट विशय के संबंध में नवीनतम प्रभावशली विधियो के प्रयोग और परिणामों को जानना जरूरी है। इस शोध पत्र मे इसी तथ्य को दृश्टिगत रखते हुये सामाजिक विज्ञान विशय के प्रशिक्षण के नवीन अनुदेशन सामग्री के पयोग करने पर जो निश्कर्श मिले उनका अध्ययन किया गया है। इस हेतु सामाजिक विज्ञान अध्यापन के लिये इस संबंध में 10 प्रतिरूपक तैयार किये गये जिसमे पाठयक्रम के शीर्शकों को चयनित किया गया है। वाद–विवाद डायलोगं विधि सी.डी. आदि अनुदेशन सामग्रियो को प्रयोग कर प्रयोगात्मक समूह के प्रशिक्षणार्थियो द्वारा शिक्षण कार्य कराया गया जिससे सामाजिक विज्ञान शिक्षण मे एक सृजानात्मक पहल हो।

न्यादर्श

इस हतु 10 शिक्षा महाविद्यालयो का चयन कर 150 सामाजिक विज्ञान प्रशिक्षणार्थियो का रेण्डम सेम्पल विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण

सामाजिक विज्ञान विधि के लिये अनुदेशन तक एवं सामग्री के उपयोग की शैक्षणिक प्रभावशीलता को ज्ञात करना।

उद्देश्य

1. बी. एड. के सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रशिक्षणार्थियो के सामाजिक विज्ञान शिक्षण मे अनुदेशन सामग्री के विकास की प्रभावशीलता को ज्ञात करना।
2. परम्परागत विधि की तुलना मे नवीन विधि जिसमे अनुदेशन सामग्री का उपयोग किया गया है इसके द्वारा प्रशिक्षणार्थियो की निश्पति का मूल्यांकन करना है।

परिकल्पना

1. बी. एड. प्रशिक्षणार्थियो के सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अनुदेशन सामग्री के विकास की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अतरं नही है।
2. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो के प्रयोगात्मक समूह और परम्परागत विधि द्वारा अध्यापन वाले समूह की निश्पति के बीच कोई सार्थक अतरं नही है।

परिणाम

1. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियो के प्रयोगात्मक समूह और परम्परागत विधि द्वारा अध्यापन वाले समूहो की पूर्व और पश्च परीक्षण के आधार पर निश्पति की तुलना मे आंकडो की गणना करने पर मध्यामान 21.40 और मानक विचलन 0.543 और पश्य परीक्षण के आधार पर मध्यामान 27.52 और मानक विचलन 1.541 है।
2. निश्पति के लिये आंकडे पूर्व परीक्षण के आधार पर मध्यामान 27.49 और मानक विचलन 1.0451 है। और पश्य परीक्षण के आधार पर प्रायोगिक समूह का मध्यमान 46 88 और मानक विचलन 6.899 है।

अतः शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो के प्रयोगात्मक समूह और परम्परागत विधि द्वारा अध्यापन वाले समूह के मध्य निश्पि तमे कोई सार्थक अंतर नही है यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है। उपरोक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के प्रशिक्षणार्थियो की निश्पति मे अनुदेशन सामग्री द्वारा अध्यापन के पश्चात विकास हुआ है।

निष्कर्ष

बालको के व्यक्तित्व मे निहित कौशलो का विकास अनुदेशन सामग्री

प्राप्त कर सकता है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो के प्रयोगात्मक समूह और परम्परागत विधि द्वारा अध्यापन करने वाले समूह के मध्य निश्पति मे अंतर होता है। शिक्षा महाविद्यालयो के प्राचार्यो के अभिमत के अनुसार बी.एड. प्रशिक्षणार्थियो के लिए सामाजिक विज्ञान अध्यापन विधि के लिए अनुदेशन तकनिक एवं अनुदेशन सामग्री के उपयोग से अध्यापन स्तर को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शिक्षा महाविद्यालय के वे व्याख्याता जो सामाजिक विज्ञान अध्यापन विधि पढाते है। उनके अभिमत के अनुसार बी.एड. प्रशिक्षण मे सामाजिक विज्ञान अध्यापन विधि के लिये अनुदेशन सामग्री का उपयोग प्रभापशाली होता है शिक्षा अधिकारियो के अभिमत के अनुदेशन सामग्री का उपयोग प्रभावशाली होता है। सामाजिक शिक्षा अधिकारियो के अभिमत के अनूसार बी.एड. प्रशिक्षण मे सामाजिक विज्ञान अध्यापन विधि के लिये अनुदेशन सामग्री का उपयोग प्रभावशाली होता है इस शोध अध्यपन द्वारा सामाजिक विज्ञान अधिगम प्रकिया को अधिक जीवत रोचक प्रेरक तथा साक्रिय बनाकर शिक्षण मे सुधार लाकर शिक्षण की गुणवता मे वृद्धि होती है।

संदर्भ

1. Giridhar CH. Encycopedia of Eductional technology, Vol-05, Published by Ajay Verma for commonwealth publisher New Delhi, 2005.
2. Mangal SK. Teaching of social scince international Publishing, Hopuse, Meerut, 2005.
3. Need Based curriculum for Bachelor of Education course, M.P. State board of eacher Education Directorate of gpublic Instuction, M.P., 1980.
4. Walia JS. Teaching of social scince publication Jalandhor.